PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 10, ISSUE 5

सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियों में स्त्री शिक्षा का महत्त्व

डॉ. पार्वती देशपांडे
हिंदी लेक्चरर
सेंट पायस डिग्री एंड पी.जी. कॉलेज हैदराबाद,
(तेलंगाना) भारत

सारांश :

समाज में स्त्री शिक्षा का विशिष्ट महत्त्व है। चाहे वह कौन सा भी क्षेत्र हो - पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक या लोकतांत्रिक, हर क्षेत्र में स्त्री शिक्षा का विशेष महत्त्व है क्योंकि एक शिक्षित स्त्री ही अपने अस्तित्व, परिवार, समाज और राष्ट्र के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सफल हो सकती है। सुधा मूर्ति ने इस पुस्तक में अपने पारिवारिक जीवन, शैक्षणिक जीवन और सामाजिक जीवन के अनुभवों को साझा किया। स्त्री होने के कारण शैक्षणिक जीवन में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उन्होंने जिन चुनौतियों और बाधाओं का सामना किया, भविष्य में स्त्री शिक्षा को लेकर आ रही बाधाओं का निवारण करने का प्रयास भी किया। उनका सादगी भरा जीवन, सकारात्मक स्वभाव सबको आकर्षित और प्रेरित करता है।

मूलशब्द - परिचय , स्त्री शिक्षा , सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियों में स्त्री शिक्षा , निष्कर्ष ।

सुधा मूर्ति का संक्षिप्त परिचय :

लेखिका सुधा मूर्ति का जन्म उत्तरी कर्नाटक में शिगांव में **19** अगस्त **1950** को कन्नड़ भाषी परिवार में हुआ। आप एक चिकित्सक आर. एच. कुलकर्णी और शिक्षिका विमला कुलकर्णी की बेटी तथा इंफोसिस फाउंडेशन के संस्थापक नारायण मूर्ति की पत्नी हैं। लेखिका ने बीवीबी कॉलेज ऑफ

इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, हुबली से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक किया। उस समय लेखिका इंजीनियरिंग कॉलेज में **150** लड़कों के बीच दाखिला पाने वाली पहली महिला थीं। यह बात पूरी स्त्री जाति के लिए स्त्री शिक्षा के महत्त्व और नारी शक्ति को उजागर करती है। आप हमेशा से ही स्त्री अधिकार और स्त्री शिक्षा के विकास के लिए कार्यरत रही हैं।

स्त्री शिक्षा:

एक कहावत है कि 'एक पुरुष को शिक्षित करके हम सिर्फ एक ही व्यक्ति को शिक्षित कर सकते हैं लेकिन एक नारी को शिक्षित करके हम पूरे देश को शिक्षित कर सकते हैं'। अपने परिवार के साथ-साथ देश और समाज की उन्नति के लिए स्त्री का शिक्षित होना अनिवार्य है। किसी भी लोकतंत्र की यह नींव है कि स्त्री और पुरुष को बराबर शिक्षा प्राप्त करने का हक़ हो। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने नारी शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण माना है – "**There cannot be an educated people without educated women**"। एक शिक्षित स्त्री ही परिवार और समाज में सुख और शांति ला सकती है। बच्चे देश का भविष्य हैं और माँ उनकी प्रथम गुरु। इसलिए स्त्री का शिक्षित होना आवश्यक है। एक शिक्षित स्त्री न केवल अपने परिवार को बल्कि पूरे समाज को सही दिशा प्रदान करती है। संस्कृत में एक उक्ति प्रसिद्ध है – "नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति मातृसमो गुरु" अर्थात इस दुनिया में विद्या के समान कोई क्षेत्र नहीं है और माता के समान कोई गुरु नहीं है। प्रत्येक स्त्री को अपनी इच्छानुसार शिक्षा ग्रहण करने और उस क्षेत्र में कार्य करने का अधिकार है जिसमें वह कुशल है।

सुधा मूर्ति के साहित्य में स्त्री शिक्षा :

लेखिका सुधा मूर्ति को शिक्षा क्षेत्र में अपनी रुचि अनुसार विषय का चयन करने और एक लेखिका बनने में उनके परिवार का बड़ा योगदान रहा। आप एक जगह लिखती हैं - "मैं अपने शानदार परिवार की शुक्रगुजार हूँ, जो जानते थे कि लिखने से मुझे कितना लगाव है और उसे समझते हुए दूसरे कामों की बजाय मुझे उसमें लगे रहने दिया।" जब एक स्त्री शिक्षित होती है तो वह अपने परिवार के साथ समाज के हित के लिए भी कार्यरत रहती है। कम आयु में उन्होंने अपने **62** वर्षीय दादी को कर्मवीर पत्रिका पढ़ने के लिए वर्णमाला सिखाई। भले ही पहले उनके वृद्ध दादी का उपहास किया गया, लेकिन दादी के दृढ़ संकल्प को साकार होते देखा और समझ लिया कि ज्ञान प्राप्ति के लिए आयु की कोई सीमा नहीं होती। लेखिका को यह शिक्षा और संस्कार अपने दादी से मिले और इसी के बल पर वे इंफोसिस फाउंडेशन की अध्यक्षा ही नहीं बल्कि एक परोपकारी, सहृदय सामाजिक कार्यकर्ता भी बनीं।

अमेरिका के एक व्याख्यान में उनकी सरल भाषा, विचार स्पष्टता और आत्मविश्वासपूर्ण प्रस्तुति पर एक श्रोता ने उनसे प्रश्न पूछा कि, "मैं सोचता हूँ कि आपने विदेश में शिक्षा ग्रहण की होगी या किसी पाश्चात्य

विश्वविद्यालय से एम.बी.ए. किया होगा। क्या यही आपके आत्मविश्वास का कारण है?" लेखिका एक पल भी व्यर्थ न करते हुए प्रत्युत्तर में कहती हैं, "यह आत्मविश्वास मुझे 'मेरे बीवीबी' से प्राप्त हुआ है।" लेखिका ने भारत के बाहर शिक्षा ग्रहण नहीं की। यह आत्मविश्वास उन्हें इतनी आसानी से प्राप्त नहीं हुआ बल्कि उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। **1968** में इंजीनियर बनने के सपने संजोए **17** वर्ष की लेखिका दृढ़ संकल्प लेती हैं कि, "मैं इंजीनियरिंग करना चाहती हूँ। चाहे जो भी हो, मैं प्रत्येक परिणाम भुगतने के लिए तैयार हूँ।" इंजीनियरिंग डिग्री के लिए लेखिका ने स्वयं के लिए कई कठोर नियम बनाए थे - सफेद साड़ी पहनना, मिठाई से परहेज करना, चटाई पर सोना, शीतल जल से स्नान करना आदि क्योंकि उन्हें आत्मनिर्भर बनना था जिसके लिए उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता के एक श्लोक का अनुकरण किया 'आत्मैव हि आत्मनो बंधु आत्मैव रिपु आत्मनः' अर्थात स्वयं को स्वयं का मित्र और शत्रु भी मानना। **150** इंजीनियरिंग छात्रों में वह एकमात्र छात्रा थीं। लड़कों द्वारा जानबूझकर बेंच पर नीली स्याही गिराई जाती थी ताकि वे बेंच पर न बैठ सकें। इस तरह के व्यवहार का सामना बिना किसी प्रतिक्रिया दिए बड़े ही साहस से किया। इसके संदर्भ में आप लिखती हैं, "मेरी आँखें डबडबा आईं, परंतु मैंने आँसुओं को रोकते हुए अख़बार से सीट को पोंछकर साफ किया और बेंच के एक किनारे पर बैठ गई।" कभी पीछे से उनके बालों में फूलों का गुच्छा लगाते और 'मिस गुलदस्ता' कहकर चिढ़ाते तो कभी पीठ पर कागज के विमान पर टिप्पणियाँ लिखकर फेंक देते थे। लेखिका ने कागज खोलकर देखा तो उसमें लिखा था, "एक स्त्री का स्थान रसोईघर, मेडिकल साइंस या प्रोफेसर के रूप में है, इंजीनियरिंग कॉलेज में कदापि नहीं।" ऐसी टिप्पणियाँ पढ़कर लेखिका हतोत्साहित नहीं हुईं, बल्कि अधिक आत्मविश्वास के साथ इंजीनियरिंग शिक्षा में लुहारी, रेतीबाजी, बढ़ईगीरी और वेल्डिंग जैसे कठिन विषयों में लड़कों से अधिक श्रेष्ठ प्रदर्शन किया और इस कथन को असत्य साबित किया कि "इंजीनियरिंग केवल पुरुषों का विषय क्षेत्र है।" **7** धीरे-धीरे लेखिका की आत्मनिर्भर बनने की योग्यता से लड़के उनका सम्मान करने लगे और सर्वेक्षणों, रेखांकनों हेतु उन पर निर्भर रहने लगे। ऐसे कई अनुभवों को उन्होंने साझा किया। पहले उनकी शिक्षा और विचारधारा को लेकर उपहास किया जाता था, किन्तु बाद में उनके कार्य के प्रति लगाव और कामयाबी पर अभिनंदन किया गया। "आलसी पोतार्दो" कहानी में पोतार्दो नामक लड़का लेखिका को पढ़ाकू कहकर चिढ़ाता था, लेकिन कुछ वर्षों बाद मिलने पर उनकी कामयाबी को देखकर विश्वास हो गया कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए ज्ञान और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है, जो आलसी पोतार्दो के पास नहीं थी। विदा लेते समय पोतार्दो लेखिका से कहता है, "उस दिन मैंने तुम्हें पढ़ाकू कहा था। आज मैं तुम्हें स्मार्ट कहता हूँ।" लेखिका ने अपने शैक्षणिक जीवन में बहुत संघर्ष किया और भावी जीवन में स्त्री शिक्षा को लेकर सचेत रहीं। सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में कई अनाथ, गरीब लड़कियों की आर्थिक सहायता कर उन्हें शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाया। इतना ही नहीं, बल्कि स्त्री शिक्षा से संबंधित हर समस्या का निवारण करने का प्रयास भी किया। कॉलेज जीवन में उन्हें महिला प्रसाधन को लेकर समस्या का सामना करना पड़ा। इस समस्या के निवारण हेतु लेखिका ने केवल कर्नाटक राज्य में **13,000** शौचालयों का निर्माण करवाया।

निष्कर्ष:

लेखिका ने अपने शैक्षणिक जीवन में कई चुनौतियों का सामना किया। शिक्षा क्षेत्र में अपने सपने साकार करने का उनका जज्बा कुछ अलग ही है। न किसी से विरोध, न कोई विद्रोह, बल्कि शांति से अपनी मेहनत के बल पर सफलता हासिल की। जो लड़के उन्हें परेशान करने का एक मौका नहीं छोड़ते थे, वही लड़के सर्वेक्षणों, रेखांकनों हेतु लेखिका के नोट्स पर निर्भर रहने लगे। अगर एक स्त्री अपने लक्ष्य पर अड़ी रहे और उसे साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करे तो उसे उस लक्ष्य तक पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता। लेखिका की एक बात बड़ी ही सराहनीय है जिससे हमें यह सीख मिलती है कि, जीवन यात्रा में चाहे वह कौन सा भी क्षेत्र हो, जितनी भी समस्याएं या संघर्ष हों, उनका सामना तो किया और उनके निवारण के लिए भी कार्यरत रहीं। यह उनका कार्य एक सच्ची सामाजिक कार्यकर्ता से हमें परिचित कराता है।

संदर्भ सूची :

1 सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियाँ ..... पृष्ठ 25

2 सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियाँ ..... पृष्ठ 157

3 सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियाँ ..... पृष्ठ 157

4 सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियाँ ..... पृष्ठ 160

5 सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियाँ ..... पृष्ठ 164

6 सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियाँ ..... पृष्ठ 165

7 सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियाँ ..... पृष्ठ 167

8 सुधा मूर्ति की लोकप्रिय कहानियाँ ..... पृष्ठ 48